ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(11): 346-348
www.allresearchjournal.com
Received: 23-08-2015
Accepted: 26-09-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हिप्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हिप्र

आदिकालीन हिन्दी गद्य साहित्य –एक विवेचन

डॉ. शिवदत्त शर्मा

ऋग्वेद साहित्य की पहली प्रामाणिक रचना है।महर्षि बाल्मिकी ने मा निषाद् प्रतिष्ठांत्वमगः शाश्वति समः द्वारा पद्य को अभिव्यक्ति की प्रथम भाषा कह कर यह प्रमाणित कर दिया है कि सर्वप्रथम जो शब्द मनुष्य के मुखारविन्द से निकला वह पद्य में ही था। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि गद्य की अपेक्षा पद्य में अभिव्यक्ति सरल एवं स्वाभाविक है।शायद यही कारण है कि हिन्दी ही नहीं विश्व की अधिकांश भाषाओं की प्रथम अभिव्यक्ति पद्यमय ही मिलती है। संस्कृत के अतिरिक्त हिन्दी में भी पद्य मय रचना से ही अभिव्यक्ति हुईहै इसी तरह अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी अधिकतर यही प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

हिन्दी साहित्य में गद्यसाहित्य का बीजारोपण आदि काल में ही हो चुका था परन्तु इसे पनपने का अधिक सुअवसर प्राप्त न हो सका।[1] इसका मुख्य कारण गद्य को अधिक महत्व न मिलना मुख्य कारण हो सकता है। अधिकांश रचनाकारों ने पद्य को ही अपनी अभिव्यक्ति का आधार बनाया तथा अनेक रचनाएं प्रस्तुत कीं।

हिन्दी साहित्य के प्रारम्भ में गद्य साहित्य का अभाव दिखाई देता है परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि गद्य का सूत्रपात नहीं हुआ था । वास्तव में गद्य की कुछ फुटकर रचनाएं इस काल में भी उपलब्ध होतीं हैं जो इस बात का संकेत हैं कि गद्य की शुरुआत इस काल में हो चुकी थी। सही अर्थो में खडी बोली गद्य के विकास का श्रेय बाबू हरिश्चन्द्र को ही जाता है जिन्होंने हिन्दी गद्य को विकसित कर प्रतिष्ठित भी किया। [2] फिर भी यह तो सत्य ही है किहिन्दी गद्य का प्रारम्भ आदि काल में ही मिल जाता है चाहे ये गद्यात्मक रचनाएं उतनी श्रेष्ठ नहीं मानी जा सकतीं जितनी भारतेन्दु काल या उसके बाद की रचनाएं हैं। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह हिन्दी गद्य का प्रारम्भिक काल है अतः गद्यके उस स्तर की आशा करना ठीक नहीं होगा। [3]

आदिकालीन गद्य साहित्य के अन्तर्गत तीन प्रमुख रचनाएं प्राप्त होतीं हैं। 1 राउल बेल 2 उक्ति–व्यक्तिप्रकरण 3 वर्णरत्नाकर ।इसके अतिरिक्त और भी गद्यात्मक रचनाएं सम्भव हैं परन्तु यहां उन्हीं तीन रचनाओं की ही चर्चा करेंगे जिनका गद्य कुछ सीमा तक हिन्दी गद्य की योग्यता के समीप ठहरता हो। इस दृष्टि से इन्हीं रचनाओं पर ही विचार किया जाएगा।

1राउल वेल– इसरचना में गद्य और पद्य का सुन्दर समावेश किया गया है। इस चम्पू काव्य के रचनाकार रोडा नामक कवि माने जाते हैं। यह रचना शिला पर उकेरी गई है तथा यह अद्भुत रचना आज भी प्रिंस आफ वेल्स, म्यूजिम ,मुंम्बई में उपलब्ध है। इस रवना का सम्पादनडॉ एच सी भायाणी ने किया था। डॉ माता प्रसाद ने इसका पुनः सम्पादन किया था तथा इसे सन् 1962 में पुस्तकाकार देकर प्रकाशित करवाया था। [4] रचनाकार रोडा राजस्थान में विद्यमान रोडा जाति से सम्बन्धित है जिसका सीधा सम्बन्ध चारण–भाट से है। यह रचना अत्यन्त संक्षिप्त है तथा मात्र 49 पंक्तियों का एक शिलालेख है। राजा डॉ नगेन्द्र ने राउलवेल का अर्थ नायिका राउल से जोडा है। जबकि अधिकांश विद्वानों ने राउल वेल का अर्थ राजकुल का विलास माना है। इस शिलालेख पर किसी राजा की छह रानियों या दासियों की सेन्दरता का नख–शिख परम्परा के आधार पर वर्णन किया गया है।इस रचना की प्रथम नायिका का वर्णन पुराना होने के कारण थोडा घिसा हुआ है। अतः इसके बारे में बहुत ज्ञात नहीं है।इसकृति की दूसरी नायिका हूणि नाम से प्रसिद्ध है। तीसरी नायिका राउल नाम की क्षत्राणी है। चौथी नायिका टिक्कणी व पांचवीं नायिका गौडी है। इन पांचों नायिकाओं के नख–शिख का वर्णन पद्यमें उपलब्ध है। छठी नायिका मालवीया है। कवि–लेखक रोडा ने इस नायिका के नख–शिख का वर्णन गद्य–शैली में किया है। इस शिलालेख पर प्रयुक्त भाषा लगभग बारहवीं शताब्दी के आसपास की है। [5] इस शिला लेख पर कवि ने गद्य–रचना में भी अलंकार–युक्त भाषा का प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए एक दृष्टान्त द्रष्टव्य है–

ज पुणु मालवी उदेसु हि आवंतु
काम्ब देउ जाउं आपणाह हथिआर हु भूलइ।
इहॉ अम्हार इ दुभगी खोंप करिउ बाझइ।

अर्थात्– जो फिर मालवीयाएं हैं उनके आते ही कामदेव भी अपने हथियार भूल गया। बे यहां हमारी दो भागी खेंप कर छोडेंगी।

2 उक्ति–व्यक्ति प्रकरण– इस रचना के लेखक राजा गोबिन्द चन्द्र के दरबारी पण्डित दामोदर हैं। राजा गोबिन्दचन्द्र का शासनकाल 1114–1154 ई तक माना जाता है। [6] इस तरह इस रचना को बारहवीं शताब्दी का माना जाता है ,जो नितान्त उचित है।सन् 1915 का में इस ग्रन्थ के बारे में सर्वप्रथम जानकारी मिली जब चमन लाल भाई का एक अनुसंन्धानात्मक निबन्ध–पाटण के भण्डार औरउनमें उपलब्ध अपभ्रंश तथा गुजराती साहित्य ,प्रकाशन में आया। सन् 1953में सिंधी जैन शास्त्र शिक्षापीठ, भारतीय विद्यापीठ, मुम्ब्ई द्वारा इसको प्रकाशित कराया गया।

वस्तुतः यह गद्य शैली में रचित एक व्याकरण ग्रंन्थ है।इसमें कुल पांच प्रकरण तथा पचास सूत्रात्मक कारिकाएं हैं। गद्यकार ने कारिकाओं का देशीय भाषामें गद्य में उदाहरण दिए हैं। इन उदाहरणों के द्वारा न केवल आदिकालीन देशी भाषा के स्वरूप का पता चलता है बल्कि तात्कालीन समाज की परिस्थितियों, जीवन–संदर्भों,परम्पराओं आदि की जानकारी भी उपलब्ध होती है। [7] अतः निश्चय ही यह ग्रन्थ हिन्दी–साहित्य के लिएविशेष महत्व रखता है। उदाहरण के लिए इस ग्रन्थ में काशी समाज में प्रचलित परम्पराओं, ब्राह्मणेां को दान,गंगा के प्रति श्रद्धा, अस्पृश्यता, भूतप्रेतों में विश्वास, हाथी–घोडे पालने के शौक आदि का पता चलता है। इसग्रन्थ की गद्य–शैली को प्रस्तुत करने वाली कुछ पंक्तियां निम्नलिखित है।

क जें परकेहं बुरुंअचित,सौ आपुणा केहं तैसे मंत। अर्थात्– जो दूसरों के बारे में बुरा सोचता है, वह अपने लिए वैसा ही कहता है।
ख जब पूत पाउ पखाल तब पितरहुं सर्गु देखाल। अर्थात्– जब पुत्र पाप को धो डालता है, तब पितरों को स्वर्ग दिखाता है।

3 **वर्ण रत्नाकर–** इसे मैथिली भाषा का प्रथम ग्रन्थ भी कहा जाता है। इसग्रन्थ की रचना कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर ने की थी। इस ग्रन्थ को 13वीं-14वीं शताब्दी के बीच का माना जाता है। डॉ सुनीति कुमार चटर्जी तथा पं बबुआ मिश्र के सहसम्पादकत्व में इस ग्रन्थ का सन् 1940 में प्रकाशन हुआ। यह ग्रन्थ कुल आठ कलोल का है। अन्तिम कलोल आठवां अधूरा है। इसमें लेखक ने नायिका वर्णन, सखी वर्णन,नायिका हास्य वर्णन,षटऋृतु वर्णन आदि में अपनी गद्य–शैली में अपने कवित्व का समावेश कर दिया है। उदाहरण के लिए लेखक नायिका के अंगों की सुन्दरता का वर्णन करते हुए कहता है–

परवाक पल्लव अइसन अधर अवि अशक कर अइसन नाक सीन्दुर मोती लोटाएल अइसन दान्त । अर्थात्– नायिका के होंठ परवाल के पत्तों के समान, नाक अनिशक के समान हैं व उसके दान्त ऐसे हैं मानो सिन्दुर के बीच में मोती लेटा हो।

इसी प्रकार अन्यत्र भी नायिका के रूप सौंदर्य का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है–

जनि कामदेव संसार जित आएल तकरि पताका । जनि एकर रूपदेखकें इन्द्र सहस्त्राक्ष भेलाह, ब्रह्माचतुर्मुख कएहलु जनि एहि आलिंगए लागि एक कृष्ण चतुर्भुज भए गेलाहा।

इस रचना की विशेषता यह है कि यह रचना न केवल प्रामाणिक ही है अपितु आगामी गद्य साहित्य का प्रारम्भिक स्वरूप भी है।यह ग्रंथ भारत की नई विकसित भारतीय आर्यभाषाओं की प्राचीन प्रवृत्तियों को समझने में भी सहायक सिद्ध होता है। इस ग्रन्थ में प्राचीन मैथिली, मगही, बंगला आदि भाषाओं के प्राचीन रूप उपलब्ध हैं जो भाषाओं के क्रमिक विकास की कहानी स्वयं कह देते हैं। इसमें तत्सम,व अर्द्धतत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग हुआा है।

इसके अतिरिक्त इन ग्रन्थों के अतिरिक्त आदिकालीन गद्य.साहित्य में विद्यापति की कीर्तिलता व कीर्तिपताका, दक्खिनी हिन्दी के उच्च कोटि के साहित्यकार ख्वाजा बन्दानवाज कृत मेराजनामा तथा शहपारे ,जैन धर्म सम्बन्धी किसी अज्ञात कवि , द्वारा लिखित आराधना का भी समावेश किया जा सकता है। इनमें कीर्तिलता व कीर्ति पताका रचनाएं पद्य.शैली में हैंपरन्तु उनमें कहींकहीं कवि विद्यापति ने गद्यशैली का भी प्रयोग किया है। स्वयं कवि विद्यापति ने तात्कालीन देशी भाषा अथवा देसी वाणी को अवहट्ठ कहा है यथा–

सक्कय वाणी बहुअन भावइ।
पाउंअ रस को मम्म न पावइ।।
देसिल बअना सब जन मिट्ठा।
तं तैसन जम्पओ अवहट्ठा ।

कीर्ति लता के गद्य–शैली में रचित अंशों की भाषा में संस्कृत शब्दावली का प्रयोग अधिक हुआ है। इस रचना के रचयिता मूलतः कवि हैं अतः उनकी रचना में कवि का कवित्व झलक ही जाता हैक्योंकि उनके गद्य में भी काव्य का प्रभाव देखा जा सकता है। 8 एक उदाहरण देखिए–

लोअ छत्तिम, अबरू परिवार रज्ज भोग परिहरिअ, बर तुरंग परिजन विमुक्किअ,
जननि पाए पन्नबिअ, जन्मभूमि को मोह छोड्डिअ, धनि छोडडिअ।

अर्थात्– लोगों को छोडकर, अन्य परिवार राजभोग छोडकर, अच्छे घोडे आदि त्यागकर, मातृभूमि के पांवों में प्रणाम कर, जन्म भूमि का मोह छोडकर, गणेश राय का पुत्र चल पडा।

यहां केवल उन्हीं गद्य रचनाओं का उल्लेख किया जा रहा है जिनकी प्रामाणिकता में कोई सन्देह नहीं है। उपर वर्णित रचनाओं के अतिरिक्त अनेक ऐसी रचनाएं हैं जिनकी प्रामाणिकता के विषय में आपत्तियां हैं अतः उनकी चर्चा यहां युक्ति संगत नहीं लगता।

दक्खिनी हिन्दी में सन्त ख्वाजा बन्दानवाज कृत मेराजनामा तथा शाहपारे में फारसी शब्दों का अधिक प्रयोग हुआहै, फिर भी इन गद्य–रचनाओं से आदिकालीन दक्खिनी हिन्दी की प्रवृत्तियों के बारे में पता चलता है। यहां पर मेराजनामा की गद्य–शैली का एक उदाहरण प्रस्तुत है–

नबी कहे तहकीक खुदा के म्याने सत्तर हजार परदे के हो अंधरै के।
का अगर उसमें ते एक परदा उठ जाये तो मैं जनूं।

पैगम्बर मुहम्मद कहते हैं कि खुदा की खोज में अंधेरे के सत्तर हजार परदे हैं। यदि उनमें से उनके तेज से एक परदा भी उठ जाए तों जानू।।

अन्य रचनाएं– कुछ उपभाषाओं में भी गद्य–साहित्य की रचना हुई जिनमें आराधना सन् 1273 में राजस्थानी भाषा में हुई है। बालशिक्षा वाटिका सन्1279 ,अतिचार सन् 1283 ,नवकार

व्याख्यानटीका सन्1301आदि प्रमुख हैं। ये रचनाएं जैन–धर्म से सम्बन्धित हैं। [9]

सन्दर्भ–सूचि

1. डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 112
2. डॉ राम खिलावन पाण्डे हिन्दी साहित्य का नया इतिहास पृ 59
3. आचार्य चतुर सेन शास्त्री इतिहास ग्रन्थ पृ 46
4. डॉ हरीशचन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 26
5. डॉ हरीश चन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य का आदि काल पृ 32
6. डॉ भोला नाथ तिवारी हिन्दी साहित्य पृ 27
7. डॉ बच्चन सिंह आधुनिक हिन्दी साहित्य पृ 56
8. डॉ गणपति चन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास पृ 34
9. डॉ मोती लाल मनेरिया राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ 74